P: ISSN NO.: 2321-290X
E: ISSN NO.: 2349-980X
RNI : UPBIL/2013/55327
Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
Vol-III* Issue-I*September-2015

ग्रामीण पर्यटन एवं जैव विविधता

राज बहादुर अनुरागी
सहायक प्राध्यापक,
सामान्य एवं व्यावहारिक भूगोल विभाग,
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय,
सागर, मध्यप्रदेश

सारांश

किसी क्षेत्र में पायी जाने वाली पादप एवं जीवों की विविधता की संख्या, उस क्षेत्र की जैव विविधता कहलाती है। पृथ्वी पर पायी जाने वाली तत्कालीन जैव–विविधता अरबों वर्षों की प्रक्रिया का परिणाम है। वर्तमान पर्यावरणीय अवक्रमण के कारण इसका तेजी से ह्रास हुआ है। जिसके परिणामस्वरूप जीवों की अनेक प्रजातियाँ या तो विलुप्त हो गई है या फिर उसकी दरकार है। चूंकि जैव विविधता पृथ्वीवासियों की सांझी सम्पदा है, जिसको बचाना विश्व समुदाय का दायित्व है। आज चूंकि पूरा विश्व जैसे– समाज, संस्थायें, शासन इसको बचाने का प्रयास कर रहा है ऐसी स्थिति में पर्यटन एवं इसकी गतिविधि उसको सतत् बनाये रखने में अहम भूमिका अदा कर सकती है। क्योंकि पर्यटन आज जिस गति से अपना अस्तित्व स्थापित कर रहा, उससे जैव विविधता जैसे आधारभूत प्राकृतिक तत्व का संरक्षण, संवर्धन एवं संचयन किया जा सकता है।

मुख्य शब्द : जैव पर्यटन, ग्रामीण पर्यटन, जैव विविधता संरक्षण, ग्रामीण पारिस्थितिकी का सतत् विकास, जैविक खेती।

प्रस्तावना

जैव विविधता के रखरखाव में ग्रामीण पर्यटन एक महत्वपूर्ण कारक है क्योंकि जैव विविधता संरक्षण द्वारा पर्यटन गतिविधि को आकर्षित किया जा सकता है। चूंकि आज दुनिया के कई देशों में जैव विविधता को सुरक्षित रखना बड़ी चुनौती है। ग्रामीण पर्यटन इस समस्या के समाधान में महत्वपूर्ण रोल/भूमिका अदा कर सकता है। इसके अलावा स्थानीय लोगों को लाभ, इसका दूसरा महत्वपूर्ण पहलू है। अतः जैव विविधता का संरक्षण करके ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के नये अवसर प्रदान किये जा सकते हैं। चूंकि ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकांश गरीब जनसंख्या रहती है। ग्रामीण कृषि अनेक समस्याओं से ग्रसित होती जा रही है। अतः भारत जैसे विकासशील देश, जिनकी धुरी कृषि पर आधारित है, पर्यटन के माध्यम से गति प्रदान की जा सकती है।

साहित्य समीक्षा

यात्रा एवं पर्यटन व्यक्ति के जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा रहा हैं। एक स्थान से दूसरे स्थान को जानने की मानव की प्राकृतिक प्रकृति ने उसे टूरिस्ट बना दिया है। शोध पत्र से सम्बन्धित साहित्य समीक्षा में जिन लेखकों का यहाँ उल्लेख कर रहा हूँ, उनमें से ए.के. भाटिया (1983) 'भारत में पर्यटन का इतिहास एवं विकास' इस दिशा में महत्वपूर्ण कार्य था जिन्होंने भारत में पर्यटन के ऐतिहासिक पहलुओं एवं पर्यटन की स्थिति का जिक्र किया है। एफ.आर. आलचिन 'Tourism in India, Its Scope and Development' भारत सरकार, पर्यटन विभाग, नई दिल्ली द्वारा किया गया। इसका सतत् विकास एवं नये आयामों का जिक्र किया है। इसके अलावा चौपड़ा एस. 'Tourism and Development in India', सेठ पी.एन. का Successfull Tourism, Planning and Management, ओ व्हाइट जे. (1937) 'History of Tourism' के इस दिशा में महत्वपूर्ण कार्य है।

ग्रामीण पर्यटन एवं जैव विविधता का मतलब ग्रामीण क्षेत्रों की विविधता को यथावत् जीवन्त रखना, उसमें वृद्धि करना एवं पर्यटन को इस दिशा की ओर बढ़ाना जिससे ग्रामीण जैव–विविधता को बढ़ाने में मदद मिले, छोटे–मोटे पर्यटन स्थल उभरकर मानचित्र पर अंकित हो, और स्थानीय लाग लाभाविन्त हो। यही इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य है।

भारत में पर्यटन एवं जैव विविधता की स्थिति

पर्यटन अंग्रेजी के Tourism से लिया गया जो Tour से उत्पन्न हुआ है। जिसका शाब्दिक अर्थ– एक औजार या गोलाकार पहिया या यात्रा चक्र से सृजित हुआ है। 1643 तक इस शब्द का उपयोग विभिन्न स्थानों की यात्रा, भ्रमण, मनोरंजन, विभिन्न राष्ट्रों की यात्रा एवं भ्रमण आदि के लिए किया जाता था। समय के साथ इसका अर्थ, विषय क्षेत्र एवं उद्देश्य बदलता गया।

यूनीवर्सल शब्द कोष के अनुसार

आनन्द प्राप्ति या ज्ञान प्राप्ति के उद्देश्य से की गई यात्रा पयटन कहलाती है। इस परिभाषा से स्पष्ट होता ह पर्यटन ज्ञानार्जन एवं मनोरंजन के लिए की जाती है इसमें व्यापारिक व लाभ में संलग्न व्यक्ति शामिल नहीं है। भारत में विदेशी एवं देशी पर्यटकों संख्या, उनका प्रतिशत आदि निम्न सारणी से स्पष्ट है:–

वर्ष	विश्व में पर्यटकों की स्थिति (मिलियन में)	भारत आने वाले विदेशी पर्यटक (मिलियन में)	देशी पर्यटक	विश्व पर्यटन में भारत की स्थिति
2001	683.8	2.54	236469599	51
2002	703.2	2.38	269598028	54
2003	691.0	2.73	309038335	51
2004	762.0	3.46	366267522	44
2005	798.0	6.92	392014270	43
2006	846.0	4.45	462321054	44
2007	894.0	5.08	526564478	41
2008	917.0	5.28	563034107	42
2009	885.0	5.17	668800482	42
2010	943.0	5.78	747703380	42
2011	990.0	6.31	850856640	38

Source: India Tourism statistics, 2011. World Tourism Organization and Bureau of Ommigration, India

उपर्युक्त सारणी को देखने से स्पष्ट होता है कि विश्व परिप्रेक्ष्य में पर्यटकों को आकर्षित करने में हम बहुत पीछे है। यही नहीं भारत विश्व रैंकिंग में जहाँ 2011 में 38वें स्थान पर था वहीं 2012 में 41वें स्थान पर खिसक गया। वर्ष 2011 म विश्व यात्रा कर जहाँ 990 मिलियन पर्यटक निकले वहीं भारत पर केवल 6.31 मिलियन लोग ही भारत आए।

इसके अतिरिक्त विश्व के 100 प्रतिशत के परिप्रेक्ष्य में भारत में केवल 0.64 (2012) व्यक्ति ही आ सके। WTICC के अनुसार भारत की जी.डी.पी. में पर्यटन का योगदान 5.6 प्रतिशत है। इसके अलावा पर्यटन ने 2009 में 31 विलियन लोगों को रोजगार प्रदान किया जो कुल रोजगार का 6.4 प्रतिशत या हर 15.6 लोगों में से 1 व्यक्ति पर्यटन एवं यात्रा गतिविधि से जुड़ा हुआ है। जिसे 2019 तक हर 13.8 में से एक व्यक्ति को इससे जोड़ना है। इसके अलावा कुल रोजगार के 40 मिलियन या 7.2 प्रतिशत (2019) तक रोजगार में वृद्धि करना है।

भारत में जैव विविधता की दृष्टि से एक सम्पन्न राष्ट्र है यहाँ राष्ट्रीय उद्यान 80, अभ्यारण्य 441 है। इसके अलावा ग्रामीण क्षेत्रों में शष्य विविधता, घरेलू जीव–जन्तु विविधता, स्थानीय पारिस्थितिकी विविधता, भाषा शैली, पहनावा, संस्कृति, भाषा आदि अन्य अनेक पर्यटकों के लिए पर्यटन केन्द्र है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध पत्र द्वितीयक समंकों पर आधारित है। समंकों का विश्लेषण कर निष्कर्ष प्राप्त किया गया है। इसके अलावा विभिन्न पुस्तकों का अवलोकन एवं अध्ययन कर प्राप्त निष्कर्ष समाहित किया गया है। सांख्यिकीय आंकड़ों हेतु पर्यटन मंत्रालय द्वारा प्रकाशित आंकड़ों को समाहित किया गया है।

प्रस्तुत शोध पत्र में पर्यटन के बढ़ते प्रभाव को ग्रामीण जैव विविधता से जोड़ने का प्रयास किया गया है। इसके विश्लेषण के लिए मुख्यतया द्वितीयक आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। आंकड़ों का संकलन भारतीय पर्यटन मंत्रालय एवं भारतीय वन विभाग द्वारा प्रकाशित समंकों के आधार पर किया गया है। सम्बन्धित समंको को एक सारणी के द्वारा प्रदर्शित कर विश्लेषण किया गया है।

जैव विविधता का संरक्षण क्यों?

मानव अस्तित्व के लिए जैव विविधता का होना बहुत आवश्यक है। यह न केवल ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देता है वरन लगभग विश्व की 45 प्रतिशत अर्थव्यवस्था का आधार भी प्रदान करता है। लगभग 20 प्रकार की वनस्पति द्वारा मानव के लिए 80 प्रतिशत खाद्यान की पूर्ति होती है। इसके अतिरिक्त मानव के द्वारा एक दिन में 40,000 जीवों एवं वनस्पतियों का उपयोग किया जाता है तथा अधिकांश लोग अपने भोजन, मानव एवं वस्तु के लिए इन पर निर्भर करते हैं। इससे स्थानीय आकर्षण, कृषि, उद्योग, मेडीसिन, रोजगार, सतत विकास जैसे अनेक क्षेत्रों में आधार–प्रदान किया जा सकता है।

जैव विविधता का ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। पर्यटन में आकर्षण (प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक) एक महत्वपूर्ण पहलू है। जैव विविधता इसका आधार है क्योंकि इसके बिना पर्यटन की कल्पना नहीं की जा सकती है। यहो कारण है कि आज पर्यटन के अनेक रूप विकसित हो गये हैं जैसे– पारिस्थितिकी पर्यटन, ग्रीन पर्यटन, तटीय पर्यटन, ट्रेकिंग पर्यटन, इको फ्रेंडली पर्यटन आदि।

जैव विविधता के ह्रास होने के उत्तरदायी कारक

जैव विधिता के ह्रास में सामूहिक कारकों का योगदान है। जंगलों का लगातार अवक्रमण व अतिक्रमण, प्राकृतिक संसाधनों का अनुचित उपयोग, प्रदूषण, अनियंत्रित कृषि विस्तार, अनियोजित पर्यटन, जलवायु परिवर्तन, पर्यावरणीय प्रदूषण, मशीनीकरण, कीटनाशक दवाएं, आदि मुख्य हैं।

जैव विविधता के ग्रामीण पर्यटन को लाभ

जैव विविधता आधारित पर्यटन से प्रत्यक्ष रूप से निम्नलिखित लाभ हो सकते है–

अतिरिक्त वित्तीय संसाधन का निर्माण

ग्रामीण क्षेत्रों में जैव विविधता के संरक्षण से पर्यटन विकास होगा जो ग्रामीण समुदाय की कृषि से प्राप्त आय के अलावा अतिरिक्त होगी।

सामुदायिक सहभागिता

ग्रामीण पर्यटन के विकास से सामुदायिक सहभागिता को बल मिलेगा। इससे समाज में एकता और भाईचारा का वातावरण निर्मित होगा तथा इससे स्थानीय स्तर के मुद्दों को निपटाने में मदद मिलेगी।

ग्रामीण पर्यटन का सतत् विकास

ग्रामीण पर्यटन के सतत् विकास के लिए विविधता का विकसित होना आवश्यक है। क्योंकि इससे ग्रामीण क्षेत्रों में आकर्षण बढ़ता है जो पर्यटकों को आकर्षित करता है। इससे पर्यटन एवं जैव विविधता दोनों का निरंतर विकास होगा।

सुरक्षित क्षेत्रों का सुनियोजित विकास

पर्यटन एवं जैव विविधता दोनों को जोड़कर एक नवीन संकल्पना का निमाण किया जा सकता है। इसके लिए कुछ खास स्थानों का चुनाव कर वहाँ अभ्यारण्य या राष्ट्रीय उद्यान या जैव संरक्षित क्षेत्र को विकसित कर पर्यटन की संकल्पना का निर्माण किया जा सकता है।

व्यवसायों की विविधता

ग्रामीण पर्यटन के विकसित होने से व्यावसायिक गतिविधियों में वृद्धि होगी जिससे स्थानीय लोगों की आमदनी बढ़ेगी और लोगों को रोजगार मिलेगा। चूंकि ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकांश लोगों का व्यवसाय कृषि के आसपास केन्द्रित रहता है जबकि पर्यटन के विकसित होने से होटल, ट्रवल, औषधि, प्रशिक्षक/गाइड तथा अन्य अनेक प्रकार के कार्यों में विविधता आएगी।

शैक्षणिक स्तर में वृद्धि

ग्रामीण पर्यटन के विकास से पर्यटकों के आवागमन से जागरूकता का विकास होगा जिससे लोगों में शिक्षा के प्रति आकर्षण बढ़ेगा तथा स्थानीय लोगों का रूझान पढ़ाई के प्रति होगा।

भूमि उपयोग में वृद्धि

सामान्यतया गामीण कृषक अपनी कृषि से खरीफ एवं रबो दोनों फसल लेता है। साथ ही अधिकांश ग्रामीण भूमि प्रबंधन के अभाव में खाली पड़ी रहती है। जैव विविधता से भूमि के उपयोग में वृद्धि होगी तथा भूमि उपयोग की पद्यति में भी परिवर्तन होगा। जिससे अनउर्वर भूमि को भो उर्वरक बनाने एवं इसके बहु उपयोग होंगे। जैसे– खेल का मैदान, बगीचा, स्कूल, कॉलेज एवं संग्रहालय जैसी कार्यों में अनुउर्वरक भूमि का उपयोग हो सकेगा।

संस्कृति संरक्षण

परम्परागत कला, ज्ञान, शिल्प, प्रथा आदि ग्रामीण पर्यटन के महत्वपूर्ण तत्व हैं। जिनका उपयोग ग्रामीण जैव विविधता के संरक्षण में किया जा सकता है। इससे ग्रामीण क्षेत्रों की खोई हुई विरासत को पुनः प्राप्त किया जा सकता है तथा उनकों संरक्षित कर पर्यटन सम्बंधी गतिविधियों से जोड़ा जा सकता है।

शोध विकास को प्रोत्साहन

जैव विविधता के विकसित होने से ग्रामीण क्षेत्रों में शोध की नवीन गतिविधियों का विकास होगा। शोधार्थियों का आकर्षण ग्रामीण क्षेत्रों की ओर बढ़ेगा तथा इससे ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा और एक सन्तुलित वातावरण का निर्माण होगा।

प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण

आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में अनेक प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक विरासत के स्थान कुएं, बावड़ी, बीहड, स्मारक एवं अन्य अनेक विरासते हैं जिनका उनके लिए कोई महत्व नहीं है लेकिन पर्यटकों के लिए विशेष है। जबकि इनकों संरक्षित करके इनके प्रवेश पर फीस, स्थानीय टैक्स एवं अन्य राजस्व प्राप्त किये जा सकते हैं जिसका प्रयत्क्ष लाभ ग्रामीणजन को ही होगा।

पर्यावरणीय गुणवत्ता का संरक्षण

निश्चित ही ग्रामीण पर्यावरण नगरीय पर्यावरण से भिन्न होता है। ग्रामीण पारिस्थितिकी को विकसित करके जैव विविधता सुरक्षित की जा सकती है जिससे पर्यटकों को शुद्ध पर्यावरणीय वातावरण उपलब्ध कराया जा सकता है।

जैव विविधता संरक्षण से पर्यटन पर हानिकारक प्रभाव

चूंकि पर्यटन के नकारात्मक प्रभाव भी है ऐसी स्थिति में प्रारंभ में इसके हानिकारक प्रभावों को प्रबंधित करना होगा। इसके हानिकारक प्रभाव निम्न हो सकते हैं–

1. शिकार करना, मछली पकड़ना, तैराकी, नौकायन, ट्रेकिन्ग आदि से जैव विविधता प्रभावित हो सकती है। इसलिए वृहद् पर्यटन की जगह लघु पर्यटन इसके लिए उपयोगी है।
2. अनियंत्रित पर्यटन से पर्यावरणीय/जलवायु परिवर्तन की संभावनाऐं बढ़ जाएगी।
3. स्थानीय संस्कृति के संरक्षण से लोग विचलित होंगे।
4. अन्य अनेक रोग वाहक रोगों की संभावना बढ़ जाएगी।
5. ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यटकों की सुरक्षा अहम् सवाल होगा।
6. आधारभूत संरचना के अभाव में पर्यटन की तीव्रता में कमी आएगी।
7. स्मगलिंग, व्यभिचार, डकैती, लूटपात, जैसी गतिविधियों की बारम्बरता होगी, जिसस ग्रामीण पर्यटन की प्रकृति प्रभावित होगी।

जैव विविधता संरक्षण को ग्रामीण पर्यटन विभाग के साथ एकीकरण

इसके लिए शासन स्तर पर यह प्रयास होना चाहिए कि जिस समुदाय/संगठन या संस्था द्वारा कम से कम पर्यावरण के नकारात्मक प्रभाव द्वारा जैव विविधता का संरक्षण एवं ग्रामीण पर्यटन में वृद्धि के प्रयास किये गये हैं, उन्हें प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इस प्रकार ग्रामीण पर्यटन का विकास एवं जैव विविधता का संरक्षण एकीकरण की दृष्टि से किया जाना चाहिए। इस प्रकार शासकीय व्यवस्था द्वारा ग्रामीण पर्यटन में निवेश पारिस्थितिकी संरक्षण को ध्यान में रखकर होना चाहिए। इसके लिए ज्ञान एवं स्नातकधारी का प्रयोग करते हुए सतत् विकास के लिए जैव विविधता, पारिस्थितिकी एवं पर्यटन में वृद्धि की जानी चाहिए।

दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि स्थानीय स्तर के व्यवसायी को ग्रामीण पर्यटन में सतत् विकास के लिए लालची प्रवृत्ति नहीं अपनानी चाहिए। उसका प्रेम प्रकृति के प्रति यथावत् रहना चाहिए। इसके अलावा टूर–आपरेटर द्वारा योजनाबद्ध तरीके से कार्य करना चाहिए। इसके अलावा विभिन्न कार्यक्रमों द्वारा ग्रामीण समुदाय को जैव विविधता के लाभ एवं उसका संरक्षण, पारिस्थितिकी, पर्यावरण आकर्षण आदि की जानकारी देकर पर्यटन लाभ से अवगत कराना चाहिए।

निष्कर्ष

पर्यटन तीव्र गति से बढ़ता हुआ उद्योग है। यह एक महत्वपूर्ण अस्त्र है जिनके माध्यम से जैव विविधता के संरक्षण में वृद्धि की जा सकती है एवं मानव समुदाय के लिए दीर्घकालीन विकास की आधारशिला रखी जा सकती है। यद्यपि करोड़ों लोग प्रतिवर्ष पूरे विश्व की यात्रा पर निकलते हैं। जिसको यदि योजनाबद्ध तरीके से नियंत्रित किया गया तो इससे जैव विविधता, पारिस्थितिकी,

पर्यावरण, रोजगार सृजन, आर्थिक राजस्व, सांस्कृतिक संरक्षण तथा विभिन्न देशों से मैत्री संबध की एक ठोस तथा निरतर चलने वाली विकासधारा विकसित की जा सकती है। विश्व में पर्यटन बड़ी तीव्र गति से जागरूकता में वृद्धि का एक बहुत बड़ा संवाहक है। इसके अलावा इसके माध्यम से जैव विविधता के संरक्षण की आवश्यकता को पूरा किया जा सकता है। यद्यपि अनेक देश, शासन एवं समाज पहले से ही पर्यटन विकास की रणनीति पर काम कर रहे है। फिर भी इसके लिए सामूहिक प्रयास बहुत जरूरी है। साथ ही छोटे–छोटे एवं महत्वपूर्ण स्थलों को बुनियादी सुविधायें प्रदान करना, उनका प्रचार–प्रसार, जीवों के प्रति संवेदना, 'ग्रीन गाँव' आदि अनेक छोटे–छोटे प्रयासों से एक ठोस एवं दीर्घगामी बुनियाद रखी जा सकती है।

ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यटन के लिए जैव विविधता के संरक्षण हेतु सुझाव

1. जैव विविधता सम्पन्न क्षेत्रों में पर्यटकों की संख्या एवं रूकने की अवधि सीमित हो।
2. पर्यटकों को अन्य क्षेत्रों के उपयोग को प्रोत्साहित करना।
3. समस्त निर्जन प्रदेशों को सम्बद्ध करना।
4. सभी पर्यटकों से एक निर्धारित शुल्क वसूलना
5. सम्बंधित क्षेत्र के विकास के लिए व्यवहारिकता, कुशलता तथा विविध उपकरणों का उपयोग करना।
6. अहितकर उपकरणों पर प्रतिबंध लगाना एवं उनका संग्रहण करना।
7. वीरान क्षेत्रों पर विचार करना एवं उनके विकास की योजना बनाना।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Dr. Anuragi, Raj Bahadur (2006), "Eco-tourism in Baghelkhand" unpublisehed Thesis, A.P.S. University, Rewa, (M.P.)
2. डॉ. नेगी जगमोहन : ''पर्यटन एवं यात्रा के सिद्धांत'', तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. Krishna, K. Kamra : Tourism – Theory, Planning and Practice, Indus Publication, New Delhi.
4. Dr. Chandra, Ashisn and Dr. Nigam, Devesn: Shriee Publishers and Distributors, New Delhi.
5. International Conference on Land use Change, Biodiversity and Sustainable Resources Management – 7th to 9th October, 2009.
6. योजना : भूमि एवं प्राकृतिक संसाधन, नवम्बर 2013, ISSN-0971-8397
7. Ministory of Environment and Forest, Government of India, www.envfor.nic.in.
8. United Nations Environment Programme (2013), Green Economy and Trade – Trends, Challenges and Opportunities.